में ली जा सकती है, वैसे ही एक एटम की ताकत भी गाँव-गाँव में विकेन्द्रित की जा सकती है और उसका उपयोग रचनात्मक कामों में किया जा सकता है। जरूरत है साइन्सवालों के विचार बदलने की। साइन्टिस्ट इस ओर ध्यान दें तो यह बहुत जल्दी हो सकता है।

दुनिया शान्ति चाहती है

आपने पेपर में पढ़ा होगा कि आइक इङ्गलैंड गये, तब उनके स्वागत में हजारों लोग रास्ते पर खड़े हुए एक ही आवाज लगा रहे थे कि "वी वान्ट पीस" हमें शान्ति चाहिए, शान्ति चाहिए। वहाँ आइक बोले कि जनता शान्ति चाहती है, लेकिन हमीं लोग अशान्ति पैदा करनेवाले हैं। हम याने सरकार। दुनिया-भर के लोग शान्ति चाहते हैं, यह बात आइक जैसे एक फौजी नेता के ध्यान में आयी है। इससे वह समझ सकता है कि साइन्स के जमाने में साइन्स की ताकत अगर हिंसा के साथ जुड़ेगी तो दुनिया का खात्मा हो जायगा। साइन्स को ताकत अहिंसा के साथ जुड़नी चाहिए। यह बहुत आवश्यक है। यह बात अब उनके ध्यान में आ रही है, जिन्होंने शस्त्रास्त्र बढ़ाये और आज भी बढ़ा रहे हैं। आज भी वे शस्त्रास्त्र बढ़ा रहे हैं, उसकी वजह यह है कि उन्हें नया रास्ता नहीं सूझ रहा है। इस समय सियासत-वालों का हिंसा की ताकत पर विश्वास नहीं रहा और अहिंसा की ताकत पर विश्वास जमा नहीं है।

सियासत और समस्याएँ

अब हिंसा से या सियासत से मसले हल नहीं होंगे। इन दस-बारह सालों में सियासी तरीकों से कौन से मसले हल हो सके हैं? क्या कश्मीर का मसला हल हुआ? बर्मा का मसला हल हुआ? गोआ, सिलोन, कोरिया, मलाया, ईजिप्ट, इजराइल और बर्लिन के मसले हल हुए? आप गहराई में जाकर देखेंगे तो पता चलेगा कि सियासत से मसले हल नहीं होते। सियासत से तो नये मसले पैदा होते हैं। अभी हाल में ही हिन्दुस्तान और चीन की सीमा का सवाल पैदा हुआ है। इसीलिए मैं कहता हूँ कि सियासत से मसले हल नहीं होंगे।

खुशी की बात है कि अभी एक मसला हल होने की सूरत में आया है, पानी का मसला। लेकिन क्या वह सियासत से हल हो रहा है? नहीं, वर्ल्ड बैंक के कारण उसे हल करने के लिए प्रेम का तरीका अपनाया गया है। इसलिए अब कनाल वाटर का झगड़ा मिटेगा। यह प्यार की बात है, सियासत की नहीं। अगर यही मसला सियासत से हल करने की बात होती तो यह भी लटकता ही रह जाता।

सत्ता चन्द लोगों के हाथ में

हमें अब नयी ताकत बनानी होगी। वह ताकत, जिसे मैं लोकशक्ति कहता हूँ, लोग स्वयं अपना शासन चलायें। वर्तमान शासन को विकेन्द्रित करना होगा। अभी जो शासन है, वह चाहे वेलफेयर के नाम से हो, डेमोक्रेसी के नाम से हो या किसी भी नाम से हो, उसके कारण कुल ताकत एक मरकज में आ जाती है और सारे समाज पर भार बढ़ जाता है। फिर समाज की तरक्की के लिए चन्द लोग मंसूबा करते हैं। कानून बनाते हैं और कानून की रक्षा के लिए पुलिस तथा लश्कर रखते हैं। उन चन्द लोगों के हाथ में ताकत आ जाती है। आज दुनिया को बनाना या बिगाड़ना चन्द लोगों के हाथ में है। आइक, ख्रुश्चेव, मैकमिलन जैसे चार-पाँच लोग हैं, मुझे उन सबके नाम याद भी नहीं हैं और उनके नाम याद रखने से भी क्या होगा? कोई भगवान के नाम तो हैं नहीं, जो उन्हें याद करने से पुण्य होगा। खैर, उन्हीं चार-पाँच लोगों के हाथ में दुनिया को आग में झोंकने की और शांति पैदा करने की ताकत है। चाहे कम्युनिज्म आये, सोशलिज्म आये, चाहे डेमोक्रेसी आये या वेलफेयरिज्म आये, तब भी ताकत तो इन चन्द लोगों के हाथ में ही रहनेवाली है।

डेमोक्रेसी का ढोंग

एक भाई मुझसे कह रहे थे कि फलानी चीज पंडित नेहरू की समझ में आ जाय तो काम बन जाय और उनकी समझ में नहीं आये तो काम नहीं बनेगा। जहाँ ऐसी फारमल डेमोक्रेसी होती है, वहाँ उसका रूपांतर देखते-देखते फौजी शासन में हो जाता है। क्या कभी आप मिट्टी का रूपांतर दही में होते हुए देखते हैं? दूध का रूपांतर दही में हो सकता है। क्योंकि वे एक-दूसरे के नजदीक हैं। मिट्टी का रूपांतर दूध में नहीं हो सकता तो डेमोक्रेसी का रूपांतर फौजी सत्ता में कैसे हो सकता है? इसलिए सही बात यह है कि आज असल में डेमोक्रेसी है ही नहीं। इस समय डेमोक्रेसी हो या वेलफेयरिज्म हो या सोशलिज्म। सबका आधार है फौज। जहाँ सबका रक्षण करनेवाला एक ही देवता (फौज) है, वहाँ सारे एक ही हैं। वे चाहे आपस-आपस में लड़ें, लेकिन उनमें कोई भेद नहीं है। उनमें ज्यादा भेद समझने की जरूरत भी नहीं है। उनमें से कोई भी आज हिंसा पर कंट्रोल करना चाहे, नियंत्रण करना चाहे, तब भी वह नहीं हो सकता। क्योंकि उन सबका दारोमदार फौज है और सारी सत्ता चंद लोगों के हाथ में है।

कभी सत्ता इनके हाथ में रहेगी, कभी उनके। कभी नेशनल कांफ्रेस के हाथ में रहेगी ओर कभी डेमोक्रेटिक नेशनल कांफ्रेन्स के हाथ में। लोग बिचारे अपना नसीब अजमाते रहेंगे। यह जो डेमोक्रेसी का एक प्रकार का ढोंग चल रहा है, उससे मुक्ति हासिल करनी होगी और लोगों की शक्ति बनानी होगी, तभी शांति हासिल होगी।

हिंदुस्तान में कांग्रेस पार्टी का राज्य है। उसके बायें पी० एस० पी०, कम्युनिस्ट आदि हैं और दायें है स्वतंत्र पार्टी। दो साल के बाद ये सारी जमातें जनता के पास पहुँचेंगी और कहेंगी कि हमारे उसूल ये हैं। इतने अच्छे उसूलों के कारण सत्ता हमारे हाथ में रहेगी तो हम आपको सुखी बनायेंगे। आप हमको वोट नहीं देंगे तो आप दुःखी बनेंगे। दो-ढाई साल के बाद चुनाव आनेवाला है। तब यही चलेगा। सब सामनेवाले पक्ष की निंदा और अपने पक्ष की स्तुति करेंगे। [चालू]

अनुक्रम

१. गो-सेवा के लिए अब समग्र दृष्टि से काम किया जाय
भटिंडी १२ सितम्बर '५९ पृष्ठ ६९१
२. समाज सिन्धु है, व्यक्ति बिन्दु···
ऊधमपुर ३ सितम्बर '५९ "६९३
३. पार्टियाँ आग लगानेवाली हैं! सियासत तोड़नेवाली है!!
जम्मू १० सितम्बर '५९ "६९३

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता: गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन: १३९१ तार: 'सर्व-सेवा' वाराणसी
www.vinoba.in